दरबारी - कानडा

थाट - आसावरी
समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर
वादी - रिषभ (रे)
संवादी - पंचम (प)
जाति - संपूर्ण / संपूर्ण
विकृत - ग, ध नी कोमल
प्रकृति - शांत, गंभीर

आरोह - नी सा रे ग रेसा, म प ध नी सां
अवरोह - सां ध नी प, म प ग म रे सा।
पकड़ - ग रे रे सा ध नी सा रे सा नी सा रे सा।

सरगम गीत

त्रिताल

रे रे सा -	नी सा रे रे	ग - - रे	रे - सा -
नी नी सा -	रें म रे सा	नी सा रे रे	ध ध नी प
म प ध नी	सा ध नी सा	- प म प	ग म रे सा
म म प प	ध ध नी नी	सां - सां -	रें रें सां -
नी नी सां -	रें रें सां -	नी नी सां रें	ध ध नी प
म प सां -	ध ध नी प	म प ग म	रे रे सा -

विशेष विवरण - आसावरी थाट का राग है। कई गुणीजन इसके आरोह में गंधार वर्जित मानते है, लेकिन ऐसा मानना सर्वथा अनुचित है। बिना गंधार के दरबारी हो ही नही सकता। भारतीय संगीत में २२ श्रुतियाँ होती है। दरबारी में श्रुतियों का प्रयोग अच्छी तरह से होता है। इसमें कोमल गंधार से कम आंदोलन संख्या का गंधार प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार इस राग का कोमल धैवत भी उतरा हुआ है। दरबारी कानडा एक प्राचीन और प्रसिद्ध राग है। प्रचार में दरबारी या तो कानडा ऐसा कहने का रिवाज है

वास्तव में इनमें कोई भेद नही है। पूज्य स्वामि श्री हरिदासजी के शिष्य तन्ना मिश्र अर्थात् तानसेन ने इस राग की रचना की। ऐसा गुणीजन कहते है। इसकी प्रकृति बडी गंभीर है और यह शांत रस का द्योतक है। ऐसा प्रभावशाली राग भारतीय संगीत में बहुत कम है। इस राग में ध्रुपद, धमार, ख्याल गाये जाते है। यह प्राय: आलाप प्रधान होने के कारण तान प्रकार बहुत कम आते है। ताने जितनी आती है गमक प्रधान ही आती है। सरल सपाट ताने लेने से अडाणा राग होगा। सपाट तान लेते समय गंधार धैवत वर्जित जैसा ही हो जाता है और सारंग राग की छाया दिखाई देती है। दरबारी राग की साधना कष्टप्रद है। उत्तम साधक कलाकार से ही दरबारी की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

स्वर विस्तार –

1) सा ऽऽऽ नी सा, नी सा ध ऽऽ नी सा ऽऽऽ रे सा ध नी प – मं प सा ध नि प, म प ध नी सा ध नी सा।

2) सा नी सा ऽ नि सा रे ऽ सा नी सा रे ध नी प म प नि सा – रे ध ऽऽ नी प, म प ध नी सा रे ग ऽऽ रे सा रे ग ऽऽ सा ध नी सा रे ग रे सा ध नी सा रे नि सा ऽऽ ध नी सा ऽऽ।

3) सा रे ग ऽऽ म रे सा नि सा रे ध नि प, म प ध नि सा रे ग ऽऽ म ग ऽऽ म प, ग ऽऽ म, म प ग ऽऽ म प प ग ऽऽ म रे सा नी सा रे ध ऽऽ ग म ऽऽ प म प ग ऽऽ म ऽऽ रे सा म म रे सा नी सा रे सा ध नि ऽ सा रे ऽ ग ऽ म ऽऽ प ग म प ग ऽ म रे सा ध नि प म प ध नि सा रे ग म प ग रे सा।

छोटा ख्याल

दरबारी कानडा — ताल - त्रिताल

स्थाई - घर जाने दे छांड मोरी बैया
हाँ हाँ करत तोरे पैय्या परत हूँ।
मोहन से झगरैया।

			रे रे म म ध र
रे रे सा रे	नि सा रे रे	प - ग -	- - - -
जा ने दे छां	- ड मो री	बै - य्या -	- - - -
रे(ग) - रे(ग) रे	सा सा सा सा	नि(सां) सा रे सा	ध(नी) नी प -
हाँ - हाँ क	र त तो रे	पै - य्या प	र त हूँ -
म - म म	प - प प	म प मपनीप	ग(म) - म(रे) म(रे)
मो - हन	से - झ ग	रै - -- --	या - घ र
0	3	X	2

छोटा-ख्याल

दरबारी कानडा

अंतरा

ताल - त्रिताल

नगर - डगर के लोगवा सुनत है।
चर्चा करत ब्रिज नारीयाँ
जाओ जी जाओ जी तुम खावोगे गालियाँ
मोहन से झगरैंया।

म म पप	ध्ध नि -	सां सां सांसां	नि नि सां -
अ ग र ब	ग र के -	लो ग वा सु	न त है -
निसां रें रें रें	सां सां सांसां	नि सां निसां रेंसां	(नि) ध नि प -
च - - र्चा क	र त ब्रिज	ना - - री	याँ - - -
म म म म	प प प प	(प) म प सां ध	- नी प -
जा ओ जी जा	ओ जी तु म	खा ओ गे गा -	- लि याँ -
(प) सां - सां सां	निसां पपप	मप मप निप	(म) ग - रे मरे
मो - ह न	से - - झ ग	रै - - -	याँ - घर
0	3	x	2

छोटा ख्याल

दरबारी कानडा

स्थाई –

जो गुरु कृपा करे कोटीक पाप कटे पलछीन मे

अंतरा – गुरु की महिमा हरि सो भारी,
वेद पुरानन सबही बखानी,
ब्रहा व्यास रटे पलछीन मे।

ताल – त्रिताल

स्थाई –			
ग म रे सा	नी सा – रे	ग – ग म	रे – सा –
जो – गु रु	कृ पा – क	रे – – –	– – – –
रे – म म	प – प प	नी म पनी मप	ग म रे सा
को – टी क	पा – प क	टे – प – ल –	छी न मे –
0	3	x	2
	अंतरा		
म म प –	ध ध नी –	सां सां सां –	रें नी सां –
गु रु की –	म हि मा –	ह रि सो –	भा – री –
नी – सां रें	गं गँमं रें सां	नी नी सांरें सां	ध नी प –
वे – द पु	रा – – न न	स ब ही – ब	खा – नी –
म – म म	प – प प	नी म पनी मप	ग म रे सा
ब्र – हा –	व्या – स र	टे – प – ल –	छी न मे –
0	3	x	2

तराना

दरबारी कानडा (तराना) ताल - त्रिताल

स्थाई - उदानीत दानी दानी दीम तम तन देरेना
उदानीत दानी दानी दीं तदीम तदीम दीं तनन दीं दीं
तनन धा किट तक धुम किट तक गदी गन धा - तन देरेना।

अंतरा - ना दिर दिर दिर तुम दिर दिर दिर दीं दीं तननन
धा किट तक धुम किट तक धा कडां धा कडां धा कडां धा
तन देरेना।

नि सा रे रे	रे रे सा रे	ग - ग म	रे रे सा -
उ दा नी त	दा नी दा नी	दीं - त न	दे रे ना -
नि सा रे रे	रे रे सा रे	ग - - म	प - - प
उ दा नी त	दा नी दा नी	दीं - - त	दीं - - त
ध - - ध	- नी प प	ध - - ध	- नी प प
दीं - - दीं	- त न न	दीं - - दीं	- त न न
म मम मम मम	पप पप मप नीप	ग - ग म	रे रे सा -
धा कीट तक धुम	कीट तक गदीगन	धा - त न	दे रे ना -
0	3	X	2
अंतरा। सम से - म मम मम मम	प पप धध धध	नि सां - सां	- सां सां सां
ना दीर दीर दीर	तु दीर दीर दीर	दीं - - दीं	- त न न
ग गंग गंग मंम	रें रें सां -	नी - प सां	- नी पम निप
धा कीट तक धुम	कीट तक धा -	कडां - धा कडां	- धा कडां - -
ग ग ग म	रे रे सा -		
धा - त न	दे रे ना -		
X	2	0	3

धमार — दरबारी कानडा — ताल - धमार

स्थाई - मंदर डफ बाजन लागेरी, आयो फागुन मास
अंतरा - अबीर गुलाल कुमकुम केसर छांडत करत कुतुहल हास

रे	नि सा रे रे	ग ग ग म प	ग म	रे - सा
म	द र ड फ	बा - - ज न	ला -	गे - री
3		×	2	0
ध ध नि सा	सा - - नीसा रे	सा रे -	सा - -
आ - यो -	फा - गु - न	मा -	स - -
3		×	2	0

अंतरा सम से -

म प प ध ध	नी नी	सां - सां	नी सां सां सां
अ बी - र -	गु -	ला - ल	कु म कु म
×	2	0	3
नी सां - नी सां रें	सां -	नी सां रें	ध ध नी प
के - - स - र	छां -	ड त -	क - र त
×	2	0	3
म प सां ग म	रे सा रे	- सा	
कु तू - ह -	ल - ह	- स मं	द र ड फ
×	2	0	3